April 2022

SRMS Trust Bulletin

आयाम

SRMS CET में हरबोला समेत 41 क्रिकेट विभूतियों का सम्मान और पवेलियन का लोकार्पण

- PAGE 03

SRMS मेडिकल कॉलेज में पहला किडनी ट्रांसप्लांट ओमप्रकाश को मिली डायलिसिस से आजादी

- PAGE 08

- स्वतंत्रता सेनानी राममूर्ति जी ने पेन्सिलवेनिया विधानसभा को किया सम्बोधित – PAGE 02
- रिद्धिमा में संगीत चिकित्सा पर व्याख्यान– PAGE 10
- SRMS मेडिकल कॉलेज में CME- जागरूकता की कमी को बताया कैंसर इलाज में बाधा – PAGE 12
- ट्रस्ट की पुरस्कृत कहानी 'आशा किरन'- PAGE 14

खिलाड़ियों को प्रोत्साहन

एसआरएमएस ट्रस्ट ने स्वास्थ्य और शिक्षा पर जोर देने के साथ ही समाज के समग्र विकास और भाईचारे को मजबूत करने पर भी ध्यान दिया है। टेबल टेनिस प्रतियोगिता, हैंडबाल टूर्नामेंट, क्रिकेट टूर्नामेंट जैसे विभिन्न खेलों के जरिये भी इसे लगातार बढ़ाने की कोशिश की है। 2012 में इसकी राज्य स्तरीय टेबल टेनिस टूर्नामेंट में प्रदेश के सभी जिलों से 450 से ज्यादा खिलाड़ी शामिल हुए। ट्रस्ट ने क्रिकेट को बढ़ावा देने के लिए वर्ष 2014 में क्रिकेट एकेडमी शुरू की। यहां से क्रिकेट के गुर सीख कर अनंत भटनागर, शुभम मिश्रा, अर्पित यादव, देवांश मूर्ति जैसे खिलाड़ियों ने राज्यस्तरीय टीम में स्थान बनाया। खेलों को दी जा रही प्राथमिकता और खिलाड़ियों को प्रदान की जा रही सुविधाओं की वजह से ही ओलंपिक एसोसिएशन ने पिछले वर्ष नेशनल महिला हैंडबाल टूर्नामेंट के सेमीफाइनल मैचों की मेजबानी एसआरएमएस ट्रस्ट को सौंपी। एसआरएमएस ट्रस्ट ने राष्ट्रीय और प्रदेश स्तर पर क्रिकेट जगत में बरेली मंडल का नाम रोशन करने वाले 13 वरिष्ठ खिलाड़ियों समेत 41 लोगों पिछले माह बरेली क्रिकेट रत्न से सम्मानित किया। इसमें 17 नवोदित खिलाड़ी और उन्हें तराशने वाले 11 कोच भी शामिल हैं। खिलाड़ियों को सम्मानित करने और भव्य आयोजन के लिए ट्रस्ट को बधाई। **जय हिंद**

अमृत कलश

''गुणों की छाप स्पष्ट रूप से चेहरे पर झलकती है। जिन गुणों को आप प्राप्त करना चाहते हैं, उन्हें मन में संजोइए, वे आपकी झोली में आ जाएंगे।।''

EDITORIAL TEAM

Amit Awasthi	-	Editor
Indu Dixit	-	Photographer
Dharmedra Kumar	-	Photographer
Yasmeen Khan	-	Designer
Vineet Sharma	-	(Co-Ordinator, IMS)
Dr. Ekta Rastogi	-	(Co-Ordinator, IBS)

Mail us: amit.awasthi@srms.ac.in, www.srms.ac.in

13 km., Ram Murti Puram, Nainital Road, Bhojipura Bareilly (U.P.) Mob.: 9458706090, 0581-2582000

पेंसिल्वेनिया विधानसभा को किया संबोधित

बात वर्ष 1972 की है। कांग्रेस आला कमान ने जनता में स्वतंत्रता सेनानी श्रीराममूर्ति जी की लोकप्रियता को देखते हुए उन्हें संगठन को मजबूत करने की जिम्मेदारी सौंपी। उन्हें उत्तर प्रदेश संगठन कांग्रेस का अध्यक्ष बनाया गया। श्रीराममूर्ति जी वाकपटु होने के साथ साथ ओजस्वी वक्ता भी थे। उनकी हाजिर जवाबी लोगों का मन मोह लेती थी। इसीलिए सरकार ने उन्हें इसी वर्ष अमेरिका जाने वाले प्रतिनिधि मंडल के नेतृत्व की जिम्मेदारी दी। अमेरिका यात्रा के दौरान प्रतिनिधि मंडल पेंसिल्वेनिया राज्य पहुंचा। वहां विधानसभा को संबोधित करने के लिए श्रीराममूर्ति को न्यौता दिया गया। श्रीराममूर्ति जी ने विधानसभा सदस्यों को हिंदुस्तान की संस्कृति की जानकारी दी और देश के विकास का खाका खींचा। उन्होंने अमेरिका दौरे में खुद को मिले सम्मान और गौरव का श्रेय अपने देश हिंदुस्तान और अपने क्षेत्र वासियों को दिया। सफल अमेरिका यात्रा ने दोनों देशों के बीच संबंधों को और आगे बढ़ाने में अहम योगदान दिया। राष्ट्रहित और लोकहित में सर्वस्व अर्पण करने वाले स्वर्गीय राम मूर्ति जी को सादर नमन।

अमेरिका के पेंसिल्वेनिया राज्य की विधानसभा में संबोधन के बाद वहां के सदस्यों से वार्ता करते स्वतंत्रता सेनानी श्रीराम मूर्ति जी
(फोटो एसआरएमएस आर्काइव)

Vision

- To be partner in building India a world leader in Medical Education & Health Care.
- To establish & develop world class self reliant institute for imparting Medical and other Health Science education at under-graduate, post-graduate & doctoral levels of the global competence.
- To serve & educate the public, establish guidelines & treatment protocols to be followed by treating hospitals.
- To provide quality & affordable health care facilities and services to all sections of society.

Mission

- To strive incessantly to achieve the goals of the Institution.
- To impart academic excellence in Medical Education.
- To practice medicine ethically in line with the global standard protocols.
- To evolve the Institution to the status of a Deemed University.
- Our Students - Our Assets.
- Our Staff - Our Means.

Values

Integrity **Excellence**
Fairness **Innovativeness**

श्री राममूर्ति स्मारक क्रिकेट स्टेडियम के पवेलियन का लोकार्पण और बरेली क्रिकेट रत्न सम्मान

बरेली क्रिकेट रत्न सम्मान पाकर खिले चेहरे

यूपीसीए के सीओओ दीपक शर्मा ने किया अभिनंदन, ट्राफी और सर्टिफिकेट बांटे

उदयीमान खिलाड़ियों को सम्मान

बरेली क्रिकेट रत्न सम्मान समारोह में उपस्थित यूपीसीए के सीओओ दीपक शर्मा जी, आदित्य मूर्ति जी, अवधेश महेश्वरी, मुदित चतुर्वेदी, सरफराज वली खान, सीता राम सक्सेना, डॉ. प्रभाकर गुप्ता, डॉ. अनुज सक्सेना के साथ सम्मान प्राप्त उदयीमान खिलाड़ी

पिछले माह 30 अप्रैल का दिन बरेली मंडल के क्रिकेट प्रेमियों के लिए यादगार बन गया। यूपी क्रिकेट एसोसिएशन के सी.ओ.ओ. दीपक शर्मा ने एसआरएमएस कालेज आफ इंजीनियरिंग एण्ड टेक्नालाजी स्थित श्री राममूर्ति स्मारक क्रिकेट स्टेडियम के पवेलियन का लोकार्पण किया। साथ ही क्रिकेट से जुड़ी 41 विभूतियों को बरेली क्रिकेट रत्न सम्मान से नवाजा। उन्होंने एसआरएमएस क्रिकेट एकेडमी में दी जा रहीं विश्वस्तरीय सुविधाओं को भी सराहा और इससे क्रिकेट में अच्छे खिलाड़ी निकलने की उम्मीद जताई।

- राष्ट्रीय और प्रदेश स्तर पर खेलने वाले 13 वरिष्ठ खिलाड़ी सम्मानित
- प्रदेश और मंडल स्तर चमकने वाले 17 नवोदित खिलाड़ियों का सम्मान
- खिलाड़ियों की प्रतिभा निखारने वाले मंडल के 11 कोच भी सम्मानित

बरेली: श्री राममूर्ति स्मारक ट्रस्ट और दैनिक जागरण की ओर से श्रीराममूर्ति स्मारक कालेज आफ इंजीनियरिंग एण्ड टेक्नालाजी स्थित शतिक सभागार में बरेली क्रिकेट रत्न सम्मान समारोह 2022 आयोजित हुआ। मुख्य अतिथि उ.प्र. क्रिकेट एसोसिएशन के चीफ आपरेटिंग आफीसर (सी.ओ.ओ.) दीपक शर्मा ने परिसर में स्थापित स्वतंत्रता सेनानी, पूर्व मंत्री, पूर्व सांसद स्वर्गीय श्रीराममूर्ति जी की मूर्ति पर श्रद्धा सुमन अर्पित किए। इसके बाद बरेली क्रिकेट रत्न सम्मान समारोह 2022 में प्रतिभाओं को सम्मानित किया। उन्होंने युवा खिलाड़ियों को क्रिकेट सम्मान दिए जाने को अच्छा कदम बताया और इससे नए खिलाड़ियों में खेल भावना जगने की भी बात कही। उन्होंने कहा कि जिस प्रकार एसआरएमएस मेडिकल कालेज ने प्रदेश में अपना नाम बनाया है उसी प्रकार उत्तर प्रदेश क्रिकेट एसोसिएशन एसआरएमएस क्रिकेट एकेडमी को विश्वस्तरीय एकेडमी बनाने का काम करेगी। बरेली में एक अच्छी एकेडमी होने से यहां के बच्चे भविष्य में बेहतर खिलाड़ी बनकर अपना और प्रदेश का नाम रौशन करेंगे। उन्होंने कहा कि करीब 35 साल पहले प्रदेश में बरेली के क्रिकेटरों का नाम था। यहां की टीम गाजियाबाद और लखनऊ जैसे शहरों की टीमों को हरा कर अपना परचम लहराती थीं। लेकिन उसके बाद सुविधाओं के अभाव में यहां के खिलाड़ी पिछड़ते चले गए। यहां स्थापित एसआरएमएस क्रिकेट एकेडमी सहित अन्य क्रिकेट एकेडमियों में दी जा रही क्रिकेट की सुविधाओं से एक बार फिर इस खेल के आगे बढ़ने की उम्मीद बनी है। उम्मीद है कि आने वाले वर्षों में बरेली के खिलाड़ी आईपीएल जैसे टूर्नामेंट सहित देश की टीम में भी खेलें, बरेली का नाम रौशन करेंगे।

इससे पहले एसआरएमएस ट्रस्ट के सचिव और बरेली क्रिकेट एसोसिएशन के संरक्षक आदित्य मूर्ति ने दीपक शर्मा तथा अन्य अतिथियों सहित सभी का स्वागत किया। उन्होंने कहा कि बरेली में पहली बार खिलाड़ियों के लिए इस प्रकार का सम्मान समारोह आयोजित किया जा रहा है। यह हमारे लिए गर्व की बात है। दैनिक जागरण और एसआरएमएस ट्रस्ट क्रिकेट खिलाड़ियों को प्रोत्साहित

उदयीमान खिलाड़ी

शुभि नरेंद्र शर्मा
प्रकाश श्रोतिया
अनंत भटनागर
शुभम मिश्रा
अर्जुन देवा
दक्ष चंदेल
देवांश राजपूत
दर्शना ठाकुर
अक्षत दुआ
रेहान खान
हर्ष राना
ऋषभ मिश्रा
जतिन गौतम
प्रांजल उपाध्याय
रणजीत सिंह
गीतांश दत्त
दिव्यांश अरोड़ा

श्रद्धांजलि...

श्री राममूर्ति स्मारक क्रिकेट स्टेडियम के पवेलियन का लोकार्पण

श्रीराममूर्ति स्मारक कालेज आफ इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलाजी स्थित श्री राममूर्ति स्मारक क्रिकेट स्टेडियम के पवेलियन के लोकार्पण पर मुख्य अतिथि दीपक शर्मा ने सभी को बधाई और शुभकामनाएं दीं। उन्होंने कहा कि एसआरएमएस क्रिकेट एकेडमी सहित यहां संचालित तमाम क्रिकेट एकेडमी बरेली में क्रिकेट के उत्थान का सार्थक प्रयास कर रही हैं। यहां खिलाड़ियों को सभी जरूरी संसाधन उपलब्ध कराए जा रहे हैं। ऐसा होता रहा तो भरोसा है आने वाले वर्षों में बरेली के खिलाड़ी आईपीएल जैसे टूर्नामेंट के साथ ही प्रदेश और देश की टीम में शामिल होकर अपना और बरेली का नाम रौशन करेंगे। उन्होंने कहा कि उत्तर प्रदेश क्रिकेट एसोसिएशन युवा खिलाड़ियों को आगे बढ़ाने का काम करता रहा है। एसआरएमएस में बने क्रिकेट ग्राउंड की पिच बनाने में लाल और काली मिट्टी का प्रयोग किया गया है जो कि एक बेहतर पिच बनाने में इस्तेमाल की जाती है। इस पिच की खासियत है कि यह बारिश होने पर जल्द पानी सोख लेती है जिससे मैच को पूरा कराया जा सकता है। उन्होंने कहा कि उत्तर प्रदेश के खिलाड़ी आज भारतीय क्रिकेट टीम में अपनी अलग पहचान बना रहे हैं। इस बार आईपीएल में प्रदेश के 11 खिलाड़ी खेल रहे हैं जो कि हम सबके लिए गर्व की बात है । हम चाहते हैं कि भविष्य में एसआरएमएस क्रिकेट एकेडमी के विद्यार्थी भी भारतीय क्रिकेट टीम का हिस्सा बनें और जिले का नाम रौशन करें।

लोकार्पण

करने के लिए सदैव एक साथ है। आज हम बरेली क्रिकेट रत्न में उन खिलाड़ियों का सम्मान करते हुए खुद को गौरवांवित महसूस कर रहे हैं जिन्होंने क्रिकेट के क्षेत्र में कीर्तिमान स्थापित किए हैं। और अपनी तपस्या से अपने साथ बरेली और प्रदेश का नाम रौशन किया है। उन्हें तराश कर हीरा बनाने वाले प्रशिक्षक भी आज हमारे साथ मौजूद हैं। हम ऐसे सभी प्रशिक्षकों का भी अभिनंदन करते हैं। आदित्य जी ने कहा कि यह सम्मान समारोह उन युवा प्रतिभाओं के लिए है जिन्होंने स्कूली क्रिकेट के साथ ही कहीं न कहीं अपनी प्रतिभा की चमक बिखेरी है। अपने खेल से आयोजकों, प्रशिक्षकों और क्रिकेट प्रेमियों को प्रभावित किया है। हम ऐसे सितारों को भी सम्मानित कर उन्हें प्रोत्साहित कर रहे हैं जिससे वह आगे बढ़ें और यहां बैठे वरिष्ठ खिलाड़ियों की तरह खुद के साथ बरेली और प्रदेश का नाम क्रिकेट की दुनिया में रौशन करें। आदित्य जी ने कहा कि बरेली में क्रिकेट की अपार संभावनाएं हैं। यहां ऐसे क्रिकेट मैदान हैं जहां बीसीसीआई के मानकों के अनुरूप सारी सुविधाएं मौजूद हैं। हम सभी व्यक्तिगत रूप से क्रिकेट के उत्थान के लिए प्रयासरत हैं। लेकिन इस आयोजन के मौके पर अपने साथ मौजूद सीओओ श्री दीपक शर्मा जी से आग्रह करते हैं कि बरेली के क्रिकेट और क्रिकेट खिलाड़ियों के उत्थान के लिए यहां भी अपना ध्यान देंगे। हमें पूर्ण विश्वास है कि बरेली का निवासी होने के नाते दीपक जी से हमें क्रिकेट के विकास के लिए हर संभव सहयोग मिलेगा। दैनिक जागरण बरेली के वरिष्ठ समाचार संपादक अवधेश महेश्वरी ने कहा कि क्रिकेट ही एकमात्र ऐसा खेल है जो हर युवा खेलना पसंद करता है। पिछले कुछ समय में क्रिकेट ने काफी तरक्की की है और बच्चों में भी क्रिकेट के प्रति प्रेम देखने को मिलता है। इस प्रकार के सम्मान समारोह हर खिलाड़ी को आगे बढ़ाने का काम करते हैं। हम सबकी जिम्मेदारी है कि जो इस खेल में आगे बढ़ना चाहते हैं उनका सम्मान करें और आगे बढ़ाने को प्रेरित करें। दैनिक जागरण बरेली के महाप्रबंधक डा.मुदित चतुर्वेदी ने कहा कि एसआरएमएस शिक्षा के साथ ही खेल में भी अपना योगदान देता रहा है। साथ ही युवा खिलाड़ियों की प्रतिभा को एक बेहतर मंच प्रदान कर उन्हें आगे बढ़ाने का काम करता रहा है। बरेली में प्रतिभा की कोई कमी नहीं है बस कमी है तो उसे पहचानने की लेकिन इस प्रकार के सम्मान समारोह से सभी बेहतर प्रदर्शन करने के लिए प्रोत्साहित होंगे।

सीईटी के डीन एकेडेमिक डा. प्रभाकर गुप्ता ने सम्मान समारोह में अतिथियों का आभार जताया और धन्यवाद ज्ञापित किया। बरेली क्रिकेट रत्न सम्मान समारोह का संचालन डा.अनुज कुमार ने किया।

इस मौके ऋचा मूर्ति जी, बरेली क्रिकेट एसोसिएशन के अध्यक्ष सरफराज वली खान, बरेली क्रिकेट एसोसिएशन के सचिव सीताराम सक्सेना, इंजीनियर सुभाष मेहरा, सुरेश सुंदरानी, गुरु मेहरोत्रा, डीपी अग्रवाल, मेडिकल कालेज के प्रिंसिपल डा.एसबी गुप्ता, अनिल मेहरोत्रा, वसंत चतुर्वेदी, डीएल खट्टर, दीपेंद्र कामथान, धर्मेंद्र शर्मा, मनीष मेहरोत्रा, अतुल मिश्रा, संजीव दीक्षित, जेपी यादव, प्रत्यक्ष ढींगरा, डा.एसएन सीरिया, डा.अनुराग मोहन श्रीवास्तव, आशीष खंडेलवाल, मृदुल बत्रा, विनय खंडेलवाल, आशीष गुप्ता, स्वतंत्र कुमार, राजीव गुप्ता, प्रियांग खंडेलवाल, रजत मेहरोत्रा, आशीष कुमार, क्रिकेट कोच मनीष सिंह, कोच नितिन सक्सेना, शंकरपाल गंगवार, समस्त चिकित्सक, इंजीनियरिंग कालेज का स्टाफ, शहर की विभिन्न खेल एसोसिएशन से जुड़े पदाधिकारी, खिलाड़ी और शहर के नामचीन लोग मौजूद रहे।

वरिष्ठ खिलाड़ियों को मिला बरेली क्रिकेट रत्न सम्मान

चेतन सचदेवा

कमल कांत कन्नौजिया

धर्मेंद्र सिंह राणा

संदीप मेहरोत्रा

युवराज सिंह

आकाश कुमार

अमन वर्मा

मनीष सिंह

रोशनी कन्नौजिया

प्रेमा रावत

इरम खान

संध्या कुमारी

सम्मान...

अवधेश महेश्वरी

मुदित चतुर्वेदी

सरफराज वली खान

सीता राम सक्सेना

प्रशिक्षिकों को मिला बरेली क्रिकेट रत्न सम्मान

ओपी कोहली
संतोष शर्मा
महफूज खान
माजिद हसन
राहुल कपूर
नितिन धवन
मोहम्मद यूसुफ
अनुज शर्मा
प्रमोद कुमार
रिजवान खान
अमित चौधरी

स्वागत

क्रिकेट ग्राउंड का अवलोकन

प्रदान किया स्मृति चिहन

उपस्थित गणमान्य

क्रिकेट स्टेडियम का पवेलियन छोर

NEW EMPLOYEE

(Till May 2022)

Dr. Chandra Mohan Chaturvedi
(Dy Medical Superientendent)
MS (General Surgery)
SRMSIMS, Bareilly

Dr. Arun Kumar Banerjee
(Professor),
MBA Department
SRMS CET, Bareilly

Dr. Saurabh Gupta
(Professor)
MBA Department
SRMS CET, Bareilly

Dr. Prafulla Pralhad Thaware
(Asso. Professor)
MD (Pharmacology)
SRMSIMS, Bareilly

Sushim Shukla
(Asst. Professor)
SRMS College of Law
Bareilly

Dr. Shubhnita Garg
(Asst. Professor)
MD (Pathology)
SRMSIMS, Bareilly

Dr. Sujit Das
(Asst. Professor)
M.S (Ophthalmology)
SRMSIMS, Bareilly

Dr. Pankaj Kumar
(Asst. Professor)
MD (Pharmacology)
SRMSIMS, Bareilly

Dr. Shubhangi Gupta
(Asst. Professor)
DNB (Obs. & Gynae.)
SRMSIMS, Bareilly

Dr. Taukeer Ahmad
(Asst. Professor)
MD (Biochemistry)
SRMSIMS, Bareilly

Akshaya Kishan
(Asst. Professor)
SRMS College of Law
Bareilly

Amit Kumar Shukla
(Asst. Professor)
SRMS College of Law
Bareilly

Aditya Kumar Singh
(Asst. Professor)
SRMS College of Law
Bareilly

एसआरएमएस ट्रस्ट के
संस्थानों में संबद्ध
होने वाले सभी नए एवं
पदोन्नत साथियों को
बधाई एवं
शुभकामनाएं ...

किडनी ट्रांसप्लांट से पाएं डायलिसिस की तकलीफों से आजादी

एसआरएमएस में पहला किडनी ट्रांसप्लांट

- बाजपुर के 42 वर्षीय ओमप्रकाश का हुआ सफल किडनी ट्रांसप्लांट
- किडनी ट्रांसप्लांट के लिए अब लखनऊ या दिल्ली जाने की जरूरत नहीं
- एसआरएमएस मेडिकल कालेज में आसानी से करवाएं किडनी ट्रांसप्लांट
- यहां विश्वस्तरीय सुविधाओं के साथ विशेषज्ञ डाक्टरों की टीम है मौजूद

बरेली: एसआरएमएस मेडिकल कालेज ने पिछले माह एक नयी उपलब्धि हासिल की। यहां मौजूद विशेषज्ञ टीम ने पहले किडनी ट्रांसप्लांट को सफलतापूर्वक अंजाम दिया। जिसके तहत बाजपुर (काशीपुर) के ओमप्रकाश (42 वर्षीय) का किडनी प्रत्यारोपण कर उन्हें हफ्ते में तीन बार डायलिसिस की दिक्कतों से आजादी दिलाई गई। यह जानकारी एसआरएमएस मेडिकल कालेज के डायरेक्टर आदित्य मूर्ति जी ने दी। उन्होंने कहा कि हम सबके लिए सबसे बड़ी खुशी की बात है कि सफलतापूर्वक किडनी ट्रांसप्लांट के बाद ओमप्रकाश और उनकी बहन पूरी तरह से स्वस्थ हैं। इस मौके पर किडनी रिसीवर ओमप्रकाश सैनी, किडनी डोनर उनकी बहन सुमन देवी और किडनी ट्रांसप्लांट की विशेषज्ञ टीम ने भी ट्रांसप्लांट से संबंध में पत्रकारों को जानकारी दी।

एसआरएमएस मेडिकल कालेज में 6 अप्रैल को प्रेस कांफ्रेंस आयोजित हुई। इसमें आदित्य मूर्ति जी ने कहा कि एसआरएमएस में किडनी ट्रांसप्लांट के लिए जरूरी आपरेशन थिएटर, आईसीयू, रेडियोलाजी, पैथोलाजी, ब्लड ट्रांसफ्यूजन जैसी अत्याधुनिक सुविधाएं उपलब्ध हैं। सफलतापूर्वक पहला किडनी ट्रांसप्लांट करके हमने यह साबित भी कर दिया है। अब मरीजों को किडनी ट्रांसप्लांट के लिए लखनऊ या दिल्ली जैसे शहरों में जाने और परेशान होने की जरूरत नहीं। वे यह सुविधा एसआरएमएस मेडिकल कालेज में ही वाजिब दरों पर हासिल कर सकते हैं। आदित्य मूर्ति जी ने कहा कि किडनी ट्रांसप्लांट की कहानी दो वर्ष पहले शुरू होती है। जब हमने सभी जरूरी संसाधन जुटा कर इसकी अनुमति हासिल करने के लिए अप्लाई किया था। कोरोनाकाल की वजह से इसमें विलंब हुआ। पिछले वर्ष तीन अक्टूबर को डायरेक्टर जनरल आफ मेडिकल एजूकेशन की ओर से हमें किडनी ट्रांसप्लांट की अनुमति हासिल हुई। इस वर्ष जनवरी में मरीज ओमप्रकाश ने ट्रांसप्लांट के लिए रजिस्ट्रेशन कराया। आपरेशन के लिए सरकारी औपचारिकताएं पूरी करने और इसकी अनुमति मिलने में कुछ समय और लगा। यह होने के बाद 30 मार्च को एसआरएमएस मेडिकल कालेज में पहला किडनी प्रत्यारोपण सफलतापूर्वक अंजाम दिया गया। उन्होंने कहा कि किडनी ट्रांसप्लांट कहने में जितना आसान लगता है उतना आसान है नहीं। इसमें तमाम मुश्किलें आती है। सफल किडनी ट्रांसप्लांट किसी भी हेल्थ सेंटर के लिए बहुत बड़ी उपलब्धि है।

किडनी ट्रांसप्लांट टीम का नेतृत्व कर रहे ट्रांसप्लांट फिजीशियन डा.संजय कुमार ने किडनी ट्रांसप्लांट और इसकी प्रक्रिया के बारे में बताया। उन्होंने कहा कि रेगुलर डायलिसिस के बाद क्रोनिक फाइव स्टेज में किडनी ट्रांसप्लांट की जरूरत पड़ती है। समय रहते एक वर्ष के अंदर किडनी ट्रांसप्लांट हो जाने पर सरवाइवल रेट 95 फीसद होता है। पांच वर्ष बाद ट्रांसप्लांट पर सरवाइवल रेट कम होकर 85 फीसद हो जाता है। जबकि पांच वर्ष डायलिसिस के साथ सरवाइवल रेट रिर्फ 40 से 50 फीसद रह जाता है। ऐसे में किडनी ट्रांसप्लांट मरीज की डायलिसिस संबंधी दिक्कतों का समाधान करने के साथ ही मरीज की जिंदगी को भी बढ़ाता है। ट्रांसप्लांट फिजीशियन डा. विद्यानंद झा ने डायलिसिस की दिक्कतों की जानकारी दी। कहा कि डायलिसिस की जटिलताएं जिंदगी को ज्यादा प्रभावित करती हैं। नियमित समयबद्ध डायलिसिस होते रहने से व्यक्ति की दिनचर्या बंध जाती है। वह दूसरे स्थान पर नहीं जा सकता। डायलिसिस होने पर किसी महिलाओं की गर्भधारण की संभावनाएं पूरी तरह खत्म हो जाती हैं। किडनी ट्रांसप्लांट होने पर उसके गर्भधारण की संभावनाएं फिर से हो जाती हैं। ट्रांसप्लांट से नियमित डायलिसिस की जटिलताओं से करीब 15 वर्ष के लिए छुटकारा मिल जाता है। व्यक्ति को रोजमर्रा के कामों को करने की आजादी मिल जाती है। वह अन्य लोगों की तरह ही सामान्य दिनचर्या से जिंदगी जीने में सक्षम हो जाता है। इसीलिए क्रानिक गुर्दा रोगों से परेशान मरीजों का रुझान किडनी ट्रांसप्लांट की ओर बढ़ रहा है।

ट्रांसप्लांट सर्जन डा. महेश त्रिपाठी ने कहा कि किडनी ट्रांसप्लांट में किडनी को निकाला नहीं जाता, जबकि उसके पास ही आपरेशन कर डोनेट की हुई किडनी लगा दी जाती है। इसमें किडनी का मरीज तो महत्वपूर्ण है ही, इससे ज्यादा

एक साल से डायलिसिस करा रहे थे ओमप्रकाश

दो वर्ष पहले बाजपुर (काशीपुर) निवासी ओमप्रकाश सैनी (42 वर्ष) का एक्सीडेंट हुआ था। बाइक से जाते समय उनके सामने नीलगाय आने से वह घायल हो गए। अल्ट्रासाउंड में दोनों किडनी डैमेज होने की जानकारी मिली। स्थानीय डाक्टरों के कहने पर ओमप्रकाश ने मुरादाबाद और दिल्ली में नेफ्रोलोजी विशेषज्ञों को दिखाया। बढ़ रही दिक्कतों से एक वर्ष पहले डायलिसिस शुरू हो गई। हफ्ते में दो बार डायलिसिस कराना पड़ता था। इसी बीच एक बार डायसिलिस में बिलंब होने से तबियत ज्यादा खराब हुई। उन्हें एसआरएमएस में भर्ती कराया गया। किडनी की स्थिति ज्यादा खराब होने से हफ्ते में तीन डायसिसिस जरूरी हो गई। यहां भी किडनी ट्रांसप्लांट की सलाह दी गई। बुजुर्ग पिता ने किडनी देना चाहा, लेकिन उम्र की वजह से ऐसा संभव नहीं था। इस पर छोटी बहन सुमन (34 वर्ष) ने किडनी डोनेट करने की हामी भरी। सुमन के इस फैसले पर उनके पति और बच्चों ने भी ऐतराज नहीं जताया। एसआरएमएस में उनकी जांचें हुई। रिपोर्ट मैच होने पर किडनी ट्रांसप्लांट की तैयारी हुई। 27 मार्च को दोनों को भर्ती किया गया। डा.संजय कुमार के नेतृत्व में किडनी ट्रांसप्लांट टीम ने सहयोगी विशेषज्ञों की मदद से तीस मार्च को सफलतापूर्वक आपरेशन को अंजाम दिया। प्रोटोकाल के तहत दो दिन दोनों को आईसीयू में रखा गया और फिर वार्ड में शिफ्ट किया गया। ओमप्रकाश और उनकी बहन सुमन अब घर में हैं और पूरी तरह से स्वस्थ हैं।

महत्वपूर्ण किडनी देने वाला होता है। हमने रुहेलखंड रीजन का पहला किडनी ट्रांसप्लांट किया है। इसमें काशीपुर निवासी एक बहन ने अपने भाई के लिए किडनी डोनेट की है। एसआरएमएस में हम किसी भी बड़े शहर के मुकाबले विश्वस्तरीय सुविधाओं के साथ कम कीमत पर किडनी ट्रांसप्लांट कर सभी तरह के गुर्दारोगों का गुणवत्तापूर्ण उपचार कर रहे हैं। ट्रांसप्लांट सर्जन डा.रेहान फरीद ने कहा कि डायलिसिस के मरीज बढ़ रहे हैं। किडनी ट्रांसप्लांट से ज्यादातर मरीजों की दिक्कतें कम की जा सकती हैं लेकिन इसके लिए उन्हें दिल्ली या लखनऊ जाना पड़ता था। हमने सफल किडनी ट्रांसप्लांट कर एसआरएमएस में ही मरीजों को यह सुविधा प्रदान की है। अब रुहेलखंड और कुमाऊं के आसपास के मरीजों को बाहर जाने की जरूरत नहीं है। इस मौके पर ट्रांसप्लांट ऐनेस्थेटिस्ट डा. विश्वदीप सिंह और डा.अलंकृता अग्रवाल किडनी ट्रांसप्लांट में एनेस्थेशिया की भूमिका पर चर्चा की। मेडिकल सुपरिंटेंडेंट डा.आरपी सिंह ने सभी का आभार जताया और कहा एसआरएमएस मेडिकल कालेज बड़ा काम कर रहा है। यहां मरीजों के लिए विश्वस्तरीय और गुणवत्तापूर्ण इलाज उपलब्ध है। इसी बदौलत रुहेलखंड और कुमाऊं रीजन के साथ आसपास के जिलों के मरीजों का विश्वास इस पर बढ़ रहा है। यहां बढ़ते मरीजों की संख्या यह बताने के लिए पर्याप्त है।

किसे जरूरी है किडनी ट्रांसप्लांट

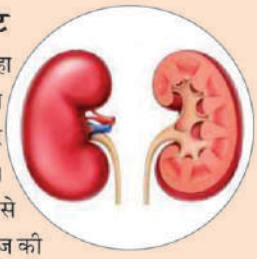

ट्रांसप्लांट फिजीशियन डा.संजय कुमार ने कहा कि किडनी का काम अपशिष्ट पदार्थों को खून से छान कर मूत्र के जरिये शरीर से बाहर निकालना है। यह लगातार काम करती रहती हैं। अनियमित खानपान या किसी लंबी बीमारी से जब किडनी काम नहीं कर पाती तब इसके इलाज की जरूरत पड़ती है। क्रोनिक स्टेट फाइव में पहुंचने पर किडनी काम करना बंद कर देती है और अपशिष्ट पदार्थों को खून से निकालने के लिए नियमित डायलिसिस जरूरी हो जाती है। किडनी खराब होने से मरीज के शरीर पर सूजन आ जाती है। सांस फूलने लगती है। चलना भी मुश्किल हो जाता है। पूरी तरह दोनों किडनी खराब होने पर एक सप्ताह में तीन बार तक डायलिसिस की आवश्यकता होती है। मरीज की तबियत डायलिसिस पर निर्भर करती है। डायलिसिस की जटिलताओं से बचने और जिंदगी को आसान बनाने के लिए ऐसे मरीजों के लिए किडनी ट्रांसप्लांट जरूरी होता है।

किडनी ट्रांसप्लांट के हीरो

नाटक, कला, गीत, संगीत के लिए समर्पित हुआ रिद्धिमा का मंच

दिल, दिमाग को दुरुस्त कर स्वस्थ रखता है संगीत

सम्मान...

डॉ. संजय वर्मा

- बीमारियों के उपचार में संगीत के योगदान पर व्याख्यान
- दो धर्मों के प्रेमी युगल की पीड़ा का नाटक 'शुद्धि' से मंचन
- मुंशी प्रेमचन्द की कहानी बड़े साहब पर 'बिग बी' का मंचन
- शास्त्रीय संगीत के साथ फनकारों के नाम 'शाम ए गजल'
- तीन दिवसीय कार्यशाला में सभी को कथक सीखने का मौका
- भरतनाट्यम और कथक नृत्य से हुई 'नायिका भेद' की प्रस्तुति

बरेली: नाटक, कला, गीत, संगीत के साथ साथ रिद्धिमा का मंच अप्रैल माह में चिकित्सा के लिए भी समर्पित हुआ। बीमारियों को दूर कर स्वस्थ रहने में संगीत के योगदान पर विस्तृत चर्चा हुई। 17 अप्रैल को वाराणसी स्थिति राजघाट के वसंत महिला महाविद्यालय में वरिष्ठ सहायक प्रोफेसर, सितार वादक डा.संजय कुमार वर्मा ने संगीत की मदद से असाध्य बीमारियों के भी ठीक होने और पूर्ण रूप से स्वस्थ होने पर व्याख्यान दिया। उन्होंने शरीर के अंगों पर रागों के प्रभाव को बताया और इससे बीमारियों के ठीक होने की बात कहीं। विश्व रंगमंच दिवस पर तीन अप्रैल को रिद्धिमा के मंच पर लेखक राजेश कुमार द्वारा लिखित नाटक 'शुद्धि' का मंचन हुआ। दो धर्मों को मानने वाले प्रेमी युगल पर आधारित इस नाटक को एकलव्य थिएटर ग्रुप देहरादून ने प्रस्तुत किया। 14 अप्रैल की शाम, शाम ए गजल के रूप में गजल और शास्त्रीय रागों के नाम रही। फनकारों ने शास्त्रीय रागों में एक से बढ़ कर एक कलाम प्रस्तुत किये। 23 अप्रैल को रिद्धिमा में तीन दिवसीय कथक कार्यशाला का आगाज हुआ। इसमें कथक गुरु संदीप मलिक ने नृत्य, कला और मुद्राओं का प्रशिक्षण दिया। 24 अप्रैल की शाम रिद्धिमा के मंच पर मुंशी प्रेमचन्द की कहानी बड़े साहब पर आधारित नाटक 'बिग बी' का मंचन हुआ। इसे दिल्ली के पीरोट्स ट्रूप थिएटर ग्रुप ने प्रस्तुत किया। रिद्धिमा के गुरुओं ने 28 अप्रैल को भरतनाट्यम और कथक नृत्य से नायिका भेद का अद्भुत प्रदर्शन किया। इस मौके पर एसआरएमएस ट्रस्ट के चेयरमैन देव मूर्ति जी, आशा मूर्ति जी, आदित्य मूर्ति जी, ऋचा मूर्ति जी, डा. रीता शर्मा, ट्रस्ट एडवाइजर इंजीनियर सुभाष मेहरा, गुरु मेहरोत्रा, सुरेश सुंदरानी, डा.अनुराग मोहन, डा.एसबी गुप्ता, एसआरएमएस सीईटी के डीन डा. प्रभाकर गुप्ता, डॉ. अनुज कुमार, आशीष मौजूद रहे।

संगीत से असाध्य बीमारियों का भी छुटकारा संभव

असाध्य बीमारियों को भी संगीत से ठीक करने का दावा करते हुए डा.संजय कुमार वर्मा ने कहा कि संगीत में असीमित ताकत होती है। यह असाध्य बीमारियों से भी निजात दिला कर शरीर को स्वस्थ करने में सक्षम है। यह काम कुशल संगीतज्ञ आसानी से कर सकता है। उन्होंने नाजुक हालत में कोमा में पहुंची एक बच्ची और उसका इलाज करने वाली संगीतज्ञ डा.एन राजन का जिक्र किया। कहा कि कोलकता के एक अस्पताल में दवाइयों से बच्ची में सुधार की कोई उम्मीद न देख संगीत का सहारा लिया गया। संगीतज्ञ राजन ने बच्ची के लिए रोजाना राग दरबारी बजाया। हफ्ते भर में ही बच्ची के शरीर में हलचल शुरू हो गई। दस दिन होते होते बच्ची कोमा से बाहर आ गई। यह चमत्कार था और ऐसे चमत्कार संगीत में आम हैं। उन्होंने कहा कि राग दीपक से दीपों का जलना और राग मल्हार से बारिश के होना किस्से भर नहीं हैं। यह वास्तविकता है। संगीत से यह संभव था और अब भी है। भोजन की तरह ही संगीत भी पाजिटिव और निगेटिव एनर्जी देता है। सही एनर्जी के लिए बस सही राग का चुनना आवश्यक है। डा.संजय ने कहा कि शरीर में दो मुख्य अंग लिवर और हार्ट हैं। जो पूरे शरीर को नियंत्रित करते हैं। उन्हीं के असंतुलन से तमाम बीमारियां जन्म लेती हैं। लिवर अन्न को पचा कर शरीर को ऊर्जा देता है। शांत चित्त होकर भोजन करने पर लिवर अपना काम सही ढंग से करता है। भोजन से पहले शास्त्रीय संगीत सुने। यह चित्त को शांत करता है। इससे भोजन ठीक से पचना आसान हो जाता है। भोजन सही से पचने लगे और इससे शरीर को जरूरत की पर्याप्त एनर्जी मिलने लगे तो डायबिटीज और बीपी संबंधी दिक्कतें दुरुस्त होने लगती हैं। इसी तरह संगीत चिकित्सा में हार्ट संबंधी दिक्कतों को ध्रुपद संगीत से ठीक किया जाता है। इससे हार्ट को एनर्जी मिलेगी और यह संतुलित होकर काम करने लगेगा। डा.संजय ने इस मौके पर सितार से कुछ रागों को बजा कर चित्त को शांत करके दिखाया। इसमें तबले पर उनकी संगत शिव शंभू कपूर ने दी।

प्रेम में दीवार बनते हैं धर्म और राजनीति

सीधे साधे त्रिभुवन तिवारी और मुस्लिम हुस्ना मुहब्बत करते हैं। लेकिन दोनों के बीच धर्म की दीवारें आ जाती हैं। अपने प्यार के लिए धर्म, घर और जाति को छोड़कर त्रिभुवन धर्म बदल कर तबरेज बन जाता है। दोनों निकाह करते हैं। इनकी खुशी दोनों समुदायों को रास नहीं आती। मुस्लिम समाज तरबेज से सच्चा मुसलमान बनने को कहता है। तो हिन्दू समाज उसे धर्म वापसी के लिए प्रेरित करता है। तबरेज शुद्धिकरण कराकर फिर हिन्दू बन जाता है। इस पर हुस्ना को जान से मारने की धमकी मिलती है। त्रिभुवन के दुखों का कारण खुद को समझ कर हुस्ना आत्महत्या कर लेती है। नाटक में त्रिभुवन का किरदार अखिलेश नारायण और हुस्ना का जागृति कोठरी ने बहुत खूबसूरती से निभाया।

जाने की जिद के बगैर सजी गजल की अंजुमन

शाम ए गजल का आगाज डा. हीतू मिश्रा ने 'ये अंजुमन है गजल की', रोएंगे हम हजार बार' और 'जुस्तजू जिसकी थी', जैसी गजलों से किया। डा. वंदना खन्ना ने 'आज जाने की जिद न करो', स्नेह आशीष दुबे ने 'उसके हंसते चेहरे से तो ऐसा लगता है', मंजू सिंह ने गजल 'हुस्नवालों के नगर में', 'खुद से भी मशविरा किया कीजिए' और डा.भूपेंद्र कुमार सिंह ने 'एक पल में एक सदी का मजा हमसे पूछिए' और 'दिल को अच्छे लगे दिलरुबा' को अपने स्वर से सजाया। सितार पर रागिनी तिखा और कुंवर पाल, तबले पर दृष्टि गोविंदा दत्ता और शिव शंभू कपूर, सारंगी पर उमेश मिश्रा, हारमोनियम पर स्नेह आशीष दुबे, वायलिन पर सूर्यकांत चौधरी और कीबोर्ड पर अगस्टीन फ्रेडरिक ने संगत दी।

कथक गुरु संदीप मलिक ने दिया प्रशिक्षण

कथक नृत्य को बढ़ावा देने एवं युवा प्रतिभाओं को प्रोत्साहित करने के लिए एसआरएमएस रिद्धिमा की ओर से आयोजित तीन दिवसीय कथक नृत्य कार्यशाला आयोजित हुई। इसमें प्रसिद्ध कथक गुरु संदीप मलिक ने शुभ पारंपरिक कथक नृत्य की बारीकियों में बेसिक आफ कथक विद द रिफ्रेंस आफ जियोमेट्री, फुटवर्क, टुकड़ा तोड़ा, तिहाई, ततकार, इनके अलावा गिनती की तिहाइयों में अनुप्रयोग की जानकारी दी। कार्यशाला में रिद्धिमा सहित एसआरएमएस ट्रस्ट के इंजीनियरिंग, मेडिकल और नर्सिंग के सस्थानों के साथ ही साहू राम स्वरूप महाविद्यालय, इनवर्टिस विश्वविद्यालय और जिले के विभिन्न विद्यालयों के 85 विद्यार्थियों ने भाग लिया।

भाइयों की टूटी फूटी अंग्रेजी ने किया लोटपोट

कामता प्रसाद और समता प्रसाद दो भाई हैं। हाथ खुद अंग्रेजी में तंग होने के बाद भी कामता प्रसाद छोटे भाई को अंग्रेजी सिखाने की कोशिश में लगा रहता है। समता बड़े भाई की डांट खाकर पढ़ता है लेकिन उसका दिमाग गुल्ली डंडा खेलने में लगा रहता है। मौका पाते ही हश्वस्टल से निकल खेलने चला जाता है। घर पहुंचने पर उसे बड़े भाई की डांट मिलती है। खेलकूद में लगे रहने के बात भी समता कक्षा में प्रथम आता है और बड़े भाई साहब तीसरी बार भी फेल हो जाते हैं। दोनों भाइयों के बीच के हिंदी और अंग्रेजी के मिश्रित वार्तालाप को दर्शकों ने खूब पसंद किया। समता का किरदार प्रिंस कुमार और कामता प्रसाद के किरदार में सईद आलम ने शानदार अभिनय प्रस्तुत किया।

रिद्धिमा के गुरुओं ने दीं एक से बढ़कर एक प्रस्तुति

नायिका भेद में पहली प्रस्तुति 'वासकासज्जा नायिका' से हुई, जिसमें गुरु देबज्योति नस्कर ने प्रेमी के लौटने की प्रतीक्षा को कथक नृत्य से पेश किया। देबज्योति ने 'स्वाधिनापतिका नायिका' के जरिये प्रेम और समर्पण का भी मंचन किया। गुरु रायश्री चटर्जी ने प्रेमी युगल के बीच की लड़ाई, अहंकार और पछतावे को 'कलहंतरिता नायिका' और 'प्रोसितावर्तिक नायिका' भेद को कथक के जरिये कथक में प्रस्तुत किया। गुरु अंबाली प्रहराज ने 'अभिसारिका नायिका' और 'विप्रलब्ध भेद' से धोखे और क्रोध को भरतनाट्यम से मंचित किया। शिव शंभू कपूर, धृति गोबिंदा दत्ता, अनीश मिश्रा, उमेश मिश्रा, सूर्यकांत चौधरी, जर्नादन, कुंवरपाल, स्नेहाशीष दुबे और शिवांगी मिश्रा ने बखूबी साथ दिया।

जागरूकता की कमी कैंसर के इलाज में बाधा

मैदान पर

मंच पर

- एसआरएमएस मेडिकल कालेज में महिलाओं में कैसर विषय पर फोर्थ सीएमई
- विशेषज्ञों ने दी महिलाओं में बढ़ते कैंसर की वजहों और रोकथाम की जानकारी
- आफलाइन और आनलाइन आयोजित की मेडिकल के विद्यार्थियों के लिए वर्कशाप
- केस स्टडी के साथ पैनल डिस्कशन में विशेषज्ञों ने किया आशंकाओं का समाधान

बरेली: आज भी कैंसर नाम से लोग डर जाते हैं। मौत को करीब से देखने लगते हैं। लेकिन अब यह लाइलाज नहीं। शुरुआती चरणों में पता चलने पर कैंसर का भी आम बीमारियों की तरह सफल इलाज होता है। लेकिन जागरूकता की कमी इलाज में बड़ी बाधा है। महिलाओं में जागरूकता की कमी के साथ ही स्वच्छता और शिक्षा का अभाव इसे और भी भयावह बना देता है। यह बात एसआरएमएस ट्रस्ट के चेयरमैन देवमूर्ति जी ने महिलाओं में कैंसर विषय पर 16 अप्रैल को आयोजित चतुर्थ सीएमई में कही।

एसआरएमएस मेडिकल कालेज में रेडिएशन ओंकोलाजी विभाग के सहयोग से सीएमई का आयोजन प्रसूति और स्त्री रोग विभाग ने किया। इसमें विशेषज्ञ चिकित्सकों ने महिलाओं में बढ़ते कैंसर की वजहों के साथ इसकी रोकथाम की भी जानकारी दी। इसके साथ ही महिलाओं में कैंसर की रोकथाम में अत्याधुनिक तरीकों के इस्तेमाल पर भी विमर्श किया गया। सभी एकमत पर थे कि समय से कैंसर की जानकारी होने पर इससे निजात मिलना किसी भी अन्य बीमारियों की तरह ही आसान है। लापरवाही और अनदेखी महिलाओं में कैंसर को गंभीर स्थिति में पहुंचा देती है। ऐसे में सबसे पहले महिलाओं को ही लापरवाही और झिझक छोड़ कर खुद इसके इलाज के लिए आगे आना पड़ेगा। तभी इसका इलाज संभव है। इसके उद्घाटन सत्र में देवमूर्ति जी ने कहा कि आज भी समाज में महिलाओं की स्थिति दयनीय है। समाज में भी उन्हें अब तक सिर्फ बच्चा पैदा करने की मशीन ही समझा जाता है। बीमार होने पर उनके इलाज का जिम्मे झोलाछाप, ओझा या मेडिकल स्टोर को मिल जाता है। या गूगल बाबा की मदद से दवाइयां शुरू हो जाती हैं। इससे बीमारी ठीक होने के बजाय बिगड़ जाती है। ग्रामीण इलाकों में ज्यादातर महिलाओं का सेनिटेशन के पुराने तरीके अपनाना और पैड के बजाय कपड़े का इस्तेमाल उन्हें कैंसर की ओर ढकेल रहा है। साफ-सफाई, जागरूकता और शिक्षा के जरिये ही इससे निपटा जा सकता है। शुरुआती चरणों में विशेषज्ञ डाक्टर के पास पहुंचने पर कैंसर से निजात पूरी तरह संभव है।

इससे पहले एसआरएमएस मेडिकल कालेज के एलटी 4 सभागार में शनिवार सुबह कार्यक्रम का आयोजन सरस्वती पूजन से हुआ। संस्थान के चेयरमैन देवमूर्ति जी, प्रिंसिपल डा.एसबी गुप्ता, डीन पीजी डा.पीएल प्रसाद, डीन यूजी डा.नीलिमा मेहरोत्रा, आर्गनाइजिंग चेयरपर्सन, रेडिएशन ओंकोलाजी डिपार्टमेंट के एचओडी डा.पियूष अग्रवाल, प्रसूति और स्त्री रोग विभाग की एचओडी डा.शशिबाला आर्या, ज्वाइंट आर्गनाइजिंग चेयरपर्सन डा.नमिता अग्रवाल, आर्गनाइजिंग सेक्रेटरी डा.शांति शाह, ज्वाइंट आर्गनाइजिंग सेक्रेटरी डा. मृदु सिन्हा, ज्वाइंट आर्गनाइजिंग सेक्रेटरी डा.रुचिका गोयल ने दीप प्रज्वलित किया। डा.शशि बाला ने सभी का स्वागत किया और कार्यक्रम की जानकारी दी। डा.पियूष अग्रवाल ने कार्यक्रम की वजह बताई और प्रिंसिपल डा.एसबी गुप्ता ने मेडिकल कालेज की उपलब्धियों का जिक्र किया। डा.शांति शाह ने सीएमई में आए सभी अतिथियों को धन्यवाद दिया और उनका आभार जताया।

सीएमई में महिलाओं में कैंसर के विभिन्न पहलुओं पर पांच सत्र आयोजित हुए। पहले सत्र में डा.पियूष अग्रवाल ने कहा कि कैंसर पुरुषों और महिलाओं दोनों को अपनी चपेट में ले रहा है। महिलाओं की बात की जाए तो ज्यादातर ब्रेस्ट कैंसर का ही नाम लिया जाता है, लेकिन इसके अलावा भी कई अन्य कैंसर हैं जो महिलाओं में तेजी से फैल रहे हैं। इनमें ओवेरियन कैंसर, सरवाइकल कैंसर भी मुख्य हैं। इन दोनों का आरंभिक स्टेज में पता चल पाना मुश्किल है। लेकिन कई ऐसे लक्षण हैं जिनके होने पर विशेषज्ञ चिकित्सक से संपर्क कर जांच करवाई जा सकती है। प्रारंभिक अवस्था में कैंसर को काबू में पाया जाना पूरी तरह संभव है। डा. शशि बाला ने वर्तमान परिप्रेक्ष्य में कैंसर की जांच पर जानकारी दी। उन्होंने कहा कि शरीर के अंगों में कैंसर फैलने से पहले ही उपचार मिलने पर इसे सौ फीसद ठीक किया जा सकता है। हर कैंसर के कुछ लक्षण हैं जिनसे पता चलता है कि कुछ गड़बड़ है। जांच से ही इसकी पुष्टि होती है और उपचार शुरू होता है। आधुनिक चिकित्सा विज्ञान में आज कई विधियों से कैंसर की जांच संभव है। ऐसे में महिलाएं किसी भी तरह की लापरवाही न करें और समय से अपनी जांच करवाएं। डा.नमिता अग्रवाल और डा.मृदु सिन्हा ने महिलाओं में कैंसर की स्क्रीनिंग की

जानकारी दी। इस सत्र को डा.अंशिका अरोरा ने कोआर्डिनेट किया। दूसरे सत्र में डा.एसके सागर ने कैंसर के इलाज में लैप्रोस्कोपी की भूमिका को स्पष्ट किया। उन्होंने कहा कि आज हर तरह की सर्जरी में लैप्रोस्कोपी का महत्व बढ़ गया है। इससे अस्पताल में मरीज के रहने का समय कम होना, कम से कम रिस्क और ज्यादा रिकवरी की वजह से खर्च कम होना भी इसका बड़ा फायदा है। इसी वजह से ज्यादातर ओपन सर्जरी के जरिये सर्वाइकल कैंसर के आपरेशन होने के बाद भी इसमें भी लैप्रोस्कोपिक सर्जरी का ज्यादा प्रयोग होने लगा है। डा.शुभांशु गुप्ता ने कैंसर के उपचार में सर्जरी की जरूरत पर जानकारी दी। डा.तनु अग्रवाल ने भी इस सेशन को संबोधित किया। इस सत्र को डा.प्रियंका चौहान ने कोआर्डिनेट किया। तीसरे सेशन में डा.आयुष गर्ग ने कैंसर के इलाज में रेडिएशनथेरेपी की भूमिका को स्पष्ट किया। डा.अरविंद कुमार चौहान ने महिलाओं में कैंसर के इलाज में कीमोथेरेपी के महत्व की जानकारी दी।

डा.रुचिका गोयल ने कैंसर मरीजों में प्रजनन के विकल्पों पर चर्चा की। उन्होंने कहा कि कैंसर के इलाज में प्रयोग की जा रही दवाइयां और कीमोथेरेपी रिप्रोडक्टिव आर्गन्स को प्रभावित करने के साथ ही फर्टिलिटी पर भी दुष्प्रभाव डालते हैं। ऐसे में आधुनिक चिकित्सा विज्ञान कैंसर मरीजों को फर्टिलिटी के विकल्प देता है। कैंसर से स्वस्थ होने के बाद मरीज इन्हें अपना कर वंशवृद्धि कर सकते हैं। इस सेशन को डा.अंकिता अरोरा ने कोआर्डिनेट किया। चौथे सत्र में पैनल डिस्कसन और क्विज राउंड आयोजित हुआ। इसमें विशेषज्ञ पैनलिस्ट ने अपने विचार रखे। अंतिम पांचवें सेशन में वीडियो डिमास्ट्रेशन के जरिये रेडियोथेरेपी प्लानिंग, ब्रांकोथेरेपी एप्लिकेशन और ड्रीटमेंट की जानकारी दी गई। इस मौके पर डा. मिलन जायसवाल, डा.तनु अग्रवाल, डा.पीके परडल, डा.ललित सिंह, डा.राहुल गोयल, डा. प्रतीक गहलोत, डा. नीरज प्रजापति, डा.जाहिद हुसैन, डा.धर्मेंद्र गुप्ता, डा. गुलफ्शां अंजुम, फैकेल्टी मेंबर और विद्यार्थी मौजूद रहे।

गर्भवती महिला के लिए स्क्रीन टेस्टिंग जरूरी

बरेली: एसआरएमएस मेडिकल कॉलेज में 25 अप्रैल को प्रसव पूर्व निदान में जैव रसायन की भूमिका विषय पर एक दिवसीय सीएमई का आयोजन हुआ। इसका उद्घाटन एसआरएमएस ट्रस्ट चेयरमैन देव मूर्ति जी और ट्रस्ट सचिव आदित्य मूर्ति ने किया। प्रसूति एवं स्त्री रोग विभाग और जैव रसायन विभाग के सहयोग से सीएमई में मुख्य अतिथि के रूप में शामिल लखनऊ स्थित आरएमएल के बायोकेमिस्ट्री विभाग के एसोसिएट प्रोफेसर डा. मनीष राज कुलश्रेष्ठ ने कहा कि प्रसूति में डाउन सिंड्रोम की समस्या से बच्चा मानसिक और शारीरिक रूप से अस्वस्थ हो सकता है। इसका इसकी जानकारी स्क्रीन टेस्टिंग से आसानी से मिल सकती है और बीमारी का पता चलने पर उपचार संभव है। किसी भी उम्र की महिला डाउन सिंड्रोम से ग्रस्त शिशु को जन्म दे सकती है, हालांकि ज्यादा उम्र की महिलाओं में डाउन सिंड्रोम से ग्रस्त शिशु को जन्म देने की आशंका ज्यादा होती है। ऐसे में हर गर्भवती महिला को स्क्रीन टेस्टिंग करानी चाहिए। डा. शशिबाला आर्या और डा. तारिक महमूद ने भी सीएमई में स्क्रीन टेस्टिंग के विषय में विस्तार से जानकारियां दीं। सीएमई में डा. प्रीति सिंह ने प्रसूति एवं स्त्री से संबंधित जानकारी दी। इस मौके पर एसआरएमएस मेडिकल कालेज के प्रिंसिपल डा. एसबी गुप्ता, मेडिकल सुप्रिटेंडेंट डा. आरपी सिंह, डीन पीजी डा. पीएल प्रसाद, एमबीबीएस और एमडी के छात्रों ने भी हिस्सा लिया।

इमरजेंसी से निपटने और नई तकनीकों की जानकारी जरूरी

बरेली: श्री राम मूर्ति स्मारक इंस्टीट्यूट आफ मेडिकल साइंसेज में 10 अप्रैल को एनेस्थीसिया विभाग की ओर से 'इमरजेंसी मेडिसिन' विषय पर कार्यशाला आयोजित हुई। इसका उद्घाटन डायरेक्टर एडमिनिस्ट्रेशन आदित्य मूर्ति जी ने किया। उन्होंने कहा कि इमरजेंसी मेडिसिन स्वास्थ प्रणाली का महत्त्वपूर्ण हिस्सा है। चिकित्सकों के ज्ञान और कौशल में सुधार करने के साथ ही नई तकनीकों में कुशल बनाने के लिए कार्यशालाएं आयोजित की जाती हैं। हमारा लक्ष्य एसआरएमएस आईएमएस को आपातकालीन चिकित्सा और आपात देखभाल में अग्रणी बनाना है जिसमें बाल चिकित्सा और प्रसूति संबंधी आपात स्थिति शामिल है। एसजीपीजीआई लखनऊ के डा. ओपी संजीव ने इमरजेंसी मेडिसिन सिस्टम की विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने बताया कि मरीज को किस प्रकार के इलाज की तत्काल आवश्यकता है यह इमरजेंसी मेडिसिन में सिखाया जाता है। हल्द्वानी के सुशीला मेडिकल कालेज की डा. नम्रता गुप्ता, बरेली के गंगाशील अस्पताल के डा. रणधीर सिंह ने भी कार्यशाला में आपातकालीन चिकित्सा पर विस्तार से जानकारी दी। कार्यशाला का आयोजन एनेस्थीसिया विभाग से डा. विश्वदीप सिंह और डा. अखिलेश पहाड़े ने किया। इसमें 100 से अधिक प्रतिनिधियों ने भाग लिया, जिसमें राजश्री मेडिकल कालेज, सुशीला तिवारी मेडिकल कालेज, सैन्य अस्पताल, बरेली और बरेली क्षेत्र के अन्य अस्पतालों के प्रतिनिधि शामिल हुए। कार्यशाला में ऋचा मूर्ति जी, प्रिंसिपल डा. एसबी गुप्ता, मेडिकल सुप्रिटेंडेंट डा. आरपी सिंह, डीन यूजी डा. नीलिमा मेहरोत्रा, डा. राजीव टंडन और एनेस्थीसिया विभाग की प्रमुख डा. जूही सरन मौजूद रहीं।

श्री राममूर्ति स्मारक ट्रस्ट द्वारा आयोजित कहानी प्रतियोगिता 2000 में द्वितीय स्थान प्राप्त कहानी

आशा किरन

लेखक- कु. इरफाना बेगम, पता- न्यू ईदगाह कालोनी, कानपुर

दूर कहीं सेथली के बजने की आवाज आ रही है, ऐसा लगता है कि किसी के घर बेटा पैदा होने की खुशी मनाई जा रही है। ऐसा तभी होता है जब गाँव में किसी के घर बेटा पैदा होता है। महिलाओं और पुरूषों में भी पंचायत होने लगी किसके घर में बेटा पैदा हुआ है। तभी गाँव के नाई ने आकर बताया कि वर्मा जी के घर में दो बेटों के बाद बेटी पैदा हुई है इसी खुशी में छठी के दिन एक बड़ा कार्यक्रम रखा गया है, इसमें सभी लोगों को खाना उन्हीं के घर पर खाना होगा। बेटी के पैदा होने पर इतनी खुशी ? ऐसा कौन सा खजाना वर्मा जी को मिल गया है जो बेटी जैसे भार पर भी इतने खुश हो रहे हैं ? कल ही से दहेज का जुगाड़ करने में लग जाएंगे, ऊपर से जमाने के उतार चढ़ाव ? कब जाने कहाँ क्या हो जाए, ऊपर से लड़की जात। खुशी मनाने के सवाल पर वर्मा जी ने कहा, अरे भाई क्या बात कर रहे हैं आजकल लड़कियां भी किसी से कम हैं क्या ? अरे लड़की को भी ठीक से पढ़ाया लिखाया जाए उनको समझने की कोशिश की जाए तो कौन कहता है कि लड़कियां पीछे रह जायेंगी ? एक कोशिश तो करनी चाहिये हम शुरूआत से ही उनको पीछे खींचने की कोशिशें शुरू कर देते हैं। मैं तो अपनी बेटी को एक अच्छा पिता बनकर पालूंगा न कि आदर्श पिता क्योंकि आदर्श पिता बनते-बनते कहीं ऐसा न हो कि मैं अच्छा पिता भी बनने से रह जाऊँ। इसलिये मैं अपनी बेटी का नाम आशाकिरन रखूंगा। ताकि मेरी बेटी मेरे साथ-साथ दूसरे लोगों की उम्मीदों को जगमगाये। धीरे-धीरे आशाकिरन बढ़ने लगी और पांच साल की आशाकिरन से वर्मा साहब ऐसे बात करते जैसे कोई खास दोस्त। वक्त पंख लगाकर लगातार उड़ता जा रहा है वर्मा जी के बेटों में से जहाँ एक बेटा मेडिकल कर रहा है। दूसरा अपने पिता की तरह अध्यापक बनने के प्रयास में विभिन्न तैयारियां करता हुआ आगे पढ़ाई जारी किये हुये है। आशाकिरन दसवीं में पहुंच चुकी है। वह अपने पिता और भाइयों से अलग-अलग विषयों पर चर्चा करती रहती। समाज में पनप रही बुराइयों से लड़ने के लिए आशाकिरन के मन में सदैव द्वन्द्व रहता है। वह भी सोचती है कि क्या वह कभी दूसरों के लिए काम कर पायेगी ? क्यों ऐसा हो जाता मुश्किल समय में वह जब भी कोई कदम उठाना चाहती है कोई उसका साथ नहीं देता। पिताजी का अकेला सहारा काफी नहीं है इस पूरे तन्त्र से लड़ने के लिए।

आशाकिरन अभी दसवीं में ही है। उसकी एक सहेली की पढ़ाई रोक दी गई, उसके बाप ने कहा कि लड़की सिर का बोझा बाटी हैं इतना पड़ लेई कोऊ लड़का न मिल पाई एके वास्ते कहाँ से दहेजवा खातिर रुपया जोड़ा जाई। यह शब्द सुनकर आशा को लगा शायद कल उसके साथ भी यही होने वाला है। लेकिन घर में उसने अपने द्वन्द्व को नहीं प्रकट होने दिया। बस यही सोचती रही कि किस तरह अपनी सहेली की मदद करे जिससे वह भी उसके साथ-साथ अपनी पढ़ाई पूरी कर सके। आशा का यह सपना साकार ही नहीं हो पाया क्योंकि जल्दी ही सहेली की शादी पास के गांव में हो गई। उसका पति सरकारी स्कूल में चपरासी था। सहेली के पिताजी को दहेज में मात्र एक हाथ घड़ी, साईकिल और बीस हजार रुपये देने पड़े। आशा ने आज पहली बार अपने बारे में निर्णय लेने का विचार किया और निर्णय लिया कि वह शादी तभी करेगी जब उसके पिता का सिर किसी के सामने न झुके और उन्हें उसको दहेज में देने के लिए न तो भाभी के गहने बेचने पड़े या घर, खेती गिरवी रखी जाए या बेची जाए। उसने सुना था कि उसकी सहेली के ससुर ने दहेज की माँग करते समय कहा था कि हमने अपने बेटे की पढ़ाई पर इतना खर्च किया है इसलिए हमें दहेज चाहिए। आशा के मन में विचार था क्यों न वह भी अपने आप को पढ़ाई के क्षेत्र में इतना स्थापित कर ले कि कोई उसे अनपढ़ होने का ताना न दे सके। वह भले ही नौकरी न करे लेकिन अपने लिए कोई दरवाजा बन्द न होने देगी। गाँवों के शहरीकरण होने के साथ ही साथ गाँवों में भी महिला सशक्तिकरण एवं अधिकारों की चर्चा होने लगी। जिसका संघर्ष उसका नेतृत्व का नारा महिलाओं को दिया जाने लगा। धीरे-धीरे आशा को अपने से जुड़े सभी सवालों के हल मिलने लगे। महिलाओं का समूह चर्चा तो कर लेता, लेकिन नेतृत्व के अभाव में कोई ठोस कदम उठाना मुश्किल हो रहा था। महिलाओं ने घूँघट के अन्दर से सुगबुगाना तो शुरू कर दिया था। पर अभी भी खुल कर बोलने का साहस उनमें नहीं था। लगातार तीन वर्षों की इस उहापोह की स्थिति से निपटने के लिए आशा ने सोचा उसे तो पिता का संरक्षण प्राप्त है क्यों न वह ही नेतृत्व सम्भालने का प्रयास करें। इस उहापोह से निकल कर आशाकिरन ने महिलाओं के बीच आशा की किरन जगाई और समूह का नेतृत्व करने के लिए तैयार हो गई। समूह बन गया और समूह को एक नेत्री मिल गई। अब महिलाओं के सामने सवाल था कि वह किस प्रकार एक साथ मिलेंगी और क्या करेंगी। इन सवालों के जवाब में आशा ने कहा कि हम सभी महिलाएं जो कि इस समूह के सदस्य हैं चार भागों

में बंट जायेंगे हमारी जो साथी बिल्कुल निरक्षर है उन्हें सबसे पहले पढ़ाई का काम शुरू करना होगा। जिन्हें हमारा पढ़ा लिखा हुआ समूह पढ़ाएगा। जिन साथियों में हस्त कौशल है वह एक समूह में होंगी और पूरे समूह को हस्त कौशल सिखायेंगी। साथ ही हमारे समूह की वह साथिने जिन्होंने हाईस्कूल से ऊपर की शिक्षा पाई है वह सब मिलकर विभिन्न विषयों पर अखबारों और पत्रिकाओं की ताजा घटनाक्रम को पढ़कर समूहों में चर्चा करेंगी। आशा के इस प्रस्ताव को सर्वसम्मति से मान लिया गया।

वहीं दूसरी ओर आशा की बढ़ती उम्र को देखते हुए घर वालों को उसकी शादी की चिन्ता सताए जा रही थी हर दूसरे तीसरे दिन कोई न कोई लड़के वाले लड़की देखने के बहाने आ जाते और बाद में जवाब देने को कह कर कभी भी पलट कर नहीं आते। क्योंकि आशा अपने निर्णय पर अडिग थी। भाइयों का विवाह भी बिना दहेज के होने के कारण और आशा की सहयोगी आदतों की वजह से भाभियाँ भी उससे सहमत थीं कि जिसने अपने अस्तित्व की रक्षा के लिए प्रण लिया है। उसके प्रण की भी रक्षा होनी चाहिए। समय के परिवर्तन चक्र के दौरान एक हादसे में वर्मा जी एवं उनकी पत्नी का देहान्त हो गया और आशा का सबसे बड़ा सहारा छिन गया। घर के दूसरे लोग जो हमेशा उसकी तारीफ करते उससे प्यार करते उन्होंने धीरे-धीरे मुख फेरना शुरू कर दिया अब उन्हें आशा का निर्णय बेकार की जिद लगने लगी। आशा ने जब सभी को अपने खिलाफ देखा तो किसी भी प्राइवेट विद्यालय में नौकरी करते हुए महिलाओं के साथ काम करने का निर्णय ले लिया। वह जब भी महिलाओं के किसी भी मुद्दे को लेकर बात करती तो उसे लगता यह तो उससे सम्बन्धित है और उस समस्या को उसे हर हाल में सुलझाना है। अब आशा के पास भले ही परिवार का सहयोग नहीं था। लेकिन गाँव भर की महिलाएं उसके साथ थीं। उसके सुख-दुख का साथी एक बड़ा जन समूह था। भाइयों को आशा के इस काम मे जरा भी दिलचस्पी नहीं थी। वह उसके बालों से झलकती चाँदी के तारों को देखकर परेशान हो उठते कि अब तो आशा को हर हाल में शादी कर ही लेनी चाहिए। भाइयों की जी तोड़ कोशिशों का नतीजा यह हुआ कि दो तीन लड़के वाले आशा को देखने आए। आशा मानसिक रूप से इतनी परिपक्व हो चुकी थी कि उसे इस नुमाइश से बिल्कुल भी डर नहीं लग रहा था। बल्कि उसने यह तय कर लिया था कि वह उन लोगों के सामने बैठकर अपने बारे में निर्णय लेगी। क्योंकि अब इस उम्र में कठपुतली बन कर जीना उसको बिल्कुल भी मंजूर नहीं था।

आशा को यह पता था कि तीनों लड़कें या तो विधुर हैं या अपनी पहली पत्नी को तलाक दे चुके हैं इसलिए इनके सामने डर कर बैठ जाने से उसका अब तक का संघर्ष बेकार हो जाएगा। आशा को उस वक्त गहरा आघात लगा जब इन लोगों ने यह कह कर कि यह लड़की बहुत तेज है घरवालों को तिंगनी का नाच नचाएगी यहाँ ब्याह नहीं करना और वैसे भी लड़की की उम्र बहुत है, रिजेक्ट कर दिया। आशा के मानसिक रूप से परिपक्व हो जाने के बाद भी यह समझ में नहीं आया कि लड़का कैसा भी हो उसकी आयु कितनी हो या वह एक बार शादी भी कर चुका हो, लेकिन हमेशा ही सुन्दर, सुशील, घरेलू कामकाज में दक्ष कम उम्र की लड़की ही क्यों चाहता है। इसमें संतुलन क्यों नहीं बैठाया जाता ऊपर से लड़की कितनी भी पढ़ी लिखी हो, दक्ष हो, उसके घर वालों को लड़के की पढ़ाई पर खर्च होने वाले धन को दहेज के रूप में देना ही होता है। वहीं एक व्यक्ति की माँग थी कि वह आशा से शादी करने को इस शर्त पर तैयार है कि आशा को शादी के बाद अपने कामों को छोड़ना होगा। क्योंकि इससे उसकी बेइज्जती होगी। लोग कहेंगे कि उसकी बीबी गाँव में लोगों के बीच बैठती, हर घर में जाती है, उनके साथ खाती-पीती है और वह यह बिल्कुल भी बर्दाश्त नहीं कर सकता। आशा के विचारों में एक कड़ी और जुड़ गई कि क्या शादी का बन्धन शर्तों पर बाँधा जाता है और शर्तों में सिर्फ लड़की को ही झुकना होता है। आशा यह समझ रही थी कि अगर उसे झुकने के लिए बहुत दबाव डाला गया तो वह झुकते-झुकते बिल्कुल टूट जाएगी और वह कभी भी टूटना नहीं चाहती थी। वह समझौतों पर जिंदगी नहीं गुजारना चाहती थी और इसलिए आशा ने एक बार फिर शादी करने को मना कर दिया। उसके इस निर्णय ने भाइयों को उससे और भी दूर कर दिया। यहाँ तक कि उसका नाता अब घर से भी धीरे-धीरे खत्म होता जा रहा है। अब तो वह अपना ज्यादा से ज्यादा वक्त उन महिलाओं के साथ गुजारती जिनके लिए उसने जीवन के अमूल्य समय को गुजारा था। अब जबकि आशाकिरन हजारों महिलाओं की आशा की किरन है। उसकी अपनी पहचान है, उसके पास विश्वास है, हिम्मत है, लेकिन ऐसा कुछ भी है जिसकी कमी है, आशा के पास आशा के खूनी रिश्तों में दूरी हो गई है। आशा जो कि हजारों की आशा की किरन है दिलों की धड़कन है अभी भी अपने जीवन की आशा की धूमिल किरन को ढूंढ रही है। अभी भी वह सोचती है कि आँखों के समन्दर के गड़बड़ होते सवालों का जवाब देने को कोई क्यों नहीं तैयार होता? सवालों के जवाब में सिर्फ सवाल ही क्यों रह जाते हैं? क्या सभी की आशाओं की किरन आशाकिरन को चमकने से रोक देगी? क्या खूनी रिश्तों का दबाव इस आशा किरन को चमकने से रोक देगा? यह सभी सवाल खूनी रिश्तों पर दबाव बनाने वालों के लिए हैं क्या दबाव बना कर किसी आशा की किरन को मिटाया जा सकता है?

(समाप्त)

हेल्थ कान्क्लेव में गुणवत्तापूर्ण दवाइयों पर चर्चा

एसआरएमएस सीईटी और इंडियन फार्मास्युटिकल एसोसिएशन की दिल्ली स्टेट ब्रांच की ओर से 23 अप्रैल को हेल्थ कान्क्लेव आयोजित किया गया। इसमें चिकित्सा और फार्मास्युटिकल क्षेत्र के विशेषज्ञों ने मरीजों को उपलब्ध कराई जाने वाली दवाइयों, अपेक्षाओं और चुनौतियों पर विचार-विमर्श किया। इसमें इंडियन फार्मास्युटिकल एसोसिएशन के अध्यक्ष कल्हन बजाज ने स्वास्थ्य के क्षेत्र में हुई प्रगति को पहचानने, तलाशने का प्रयास किया। साथ ही स्वास्थ्य संबंधी नीतियों के कार्यान्वयन में चुनौतियों, स्वास्थ्य सेवा क्षेत्र में रोजगार के अवसरों पर भी चर्चा की। कान्क्लेव में चेयरमैन देव मूर्ति जी, सचिव आदित्य मूर्ति जी, इंडियन फार्मास्युटिकल एसोसिएशन के सेक्रेटरी डा. नीरज, इंडियन फार्मास्युटिकल एसोसिएशन की कार्यकारी समिति के सदस्य डा. सौरभ दहिया, आईएमएस के प्रिंसिपल डा.एसबी गुप्ता, मेडिकल सुपरिंटेंडेंट डा.आरपी सिंह, सीईटी के डीन एकेडेमिक डा प्रभाकर गुप्ता, प्लेसमेंट सेल के डायरेक्टर डा.अनुज कुमार, फार्मेसी विभाग के निदेशक डा.नितिन शर्मा, एसआरएमएस मेडिकल कालेज के वरिष्ठ चिकित्सक मौजूद रहे।

उन्नाव में स्वास्थ्य जागरूरता को निकाली रैली

उन्नाव स्थित एसआरएमएस कालेज आफ नर्सिंग एंड पैरामेडिकल साइंसेज की ओर से सात अप्रैल को विश्व स्वास्थ्य दिवस के मौके पर स्वास्थ्य जागरूकता रैली का आयोजन किया गया। रैली में शामिल कालेज के विद्यार्थियों को कालेज से झंडी दिखा कर प्रिंसिपल शामिल सी.बी और उन्नाव स्थित एसआरएमएस हास्पिटल के मेडिकल सुपरिंटेंडेंट डा.रमेश श्रीवास्तव ने रवाना किया। विद्यार्थी गांव आशाखेड़ा तक गए। जहां ग्रामीणों को स्वास्थ्य से संबंधित जानकारी दी गई और उनके लिए स्वास्थ्य जांच कैंप लगाया गया। इस मौके पर डाली श्रीवास्तव, अपेक्षा पांडेय, अंकिता विल्सन और दिव्या चौहान शामिल रहीं।

कम्यूनिटी मेडिसिन विभाग ने किया जागरूक

एसआरएमएस मेडिकल कालेज स्थित कम्यूनिटी मेडिसिन विभाग की ओर से विश्व स्वास्थ्य दिवस पर सात अप्रैल को जागरूकता कार्यक्रमों के साथ स्वास्थ्य कैंप आयोजित किया गया। हास्पिटल में डा.धर्मेंद्र गुप्ता ने मरीजों को स्वास्थ्य के प्रति जागरूक किया। अर्बन सेंटर पर डा.आरसी गुप्ता, डा. पलक गोयल ने स्वच्छ हवा, पानी और खाने के महत्व को बताया। धौराटांडा स्थित ग्रामीण सेंटर पर डा.रुचि और डा. आशीष ने बदलते मौसम में स्वस्थ कैसे रहें की जानकारी दी। भैरपुरा स्थित टेलीमेटिसिन सेंटर पर डा.शालिनी और डा.संजय ने, मोबाइल टेलीमेडिसिन बस के जरिये डा.प्रगति जायसवाल ने ग्रामीणों को जागरूक किया।

लखनऊ स्थित इंटरनेशनल बिजनेस स्कूल में 23 अप्रैल को कल्चरल क्लब की ओर से आयोजित रंगमंच इवेंट में शामिल प्रतिभागी

आईबीएस में छात्रवृत्ति वितरण में शामिल चेयरमैन देव मूर्ति जी और श्यामल गुप्ता जी

आईबीएस में छात्रवृत्ति वितरित

एसआरएमएस आईबीएस में 19 अप्रैल को आनलाइन यूजी प्रवेश परीक्षा में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले बीबीए, बीसीए और बीकाम (आनर्स) के 26 विद्यार्थियों को सम्मानित किया गया। इस मौके पर ट्रस्ट के चेयरमैन देवमूर्ति जी ने इन मेधावी विद्यार्थियों को नकद छात्रवृत्ति का वितरण किया। उन्होंने ट्रस्ट द्वारा प्रदान की जा रही 3.5 करोड़ की छात्रवृत्ति की जानकारी दी और सभी को इसे हासिल करने के लिए प्रेरित किया। इस मौके पर आईबीएस के डायरेक्टर श्यामल गुप्ता जी और फैकेल्टी मेंबर मौजूद रहे।

बरेली सीईटी में इंट्री लेविल छात्रवृत्ति

एसआरएमएस कालेज आफ इंजीनियरिंग एंड टेक्नालाजी के सेमीनार हाल में 13 अप्रैल को सीईटी और सीईटीआर के 210 विद्यार्थियों को इंट्री लेविल प्रदान की गई। ट्रस्ट द्वारा आयोजित प्रवेश परीक्षा ''ई.ई.टी. 2021'' में प्रदर्शन के आधार पर प्रदान की गई छात्रवृत्ति की धनराशि 10 हजार रुपये से लेकर 40 हजार रुपये तक प्रदान किए गए। इसका वितरण संस्थान के चेयरमैन देवमूर्ति जी ने किया। इस मौके पर कालेज के डीन एकेडिमिक्स डा. प्रभाकर गुप्ता, सीईटीआर के प्राचार्य डा.संजीव पुरी, ट्रेनिंग एंड प्लेसमेन्ट सेल के डायरेक्टर डा.अनुज कुमार, फार्मेसी विभाग के डायरेक्टर डा.नितिन शर्मा, डीन स्टूडेन्टस वैलफेयर इंजीनियर कपिल भूषण और सभी विभागो के विभागाध्यक्ष एवं विद्यार्थी उपस्थित रहे।

एमबीबीएस 2020 बैच ने किया नए स्टूडेंट्स का स्वागत

एसआरएमएस मेडिकल साइंसेज में नौ अप्रैल को एमबीबीएस 2020 बैच के विद्यार्थियों ने नए स्टूडेंट्स के स्वागत के लिए फ्रेशर्स पाटह्र आयोजित की। इसका शुभारंभ ट्रस्ट चेयरमैन देवमूर्ति जी, सचिव आदित्य मूर्ति जी, प्रिंसिपल डा. एसबी गुप्ता और मेडिकल सुपरिटेंडेंट डा. आरपी सिंह ने किया। इसमें पहली प्रस्तुति में वंदना, देवेश, शशांक और खुशी ने 90 के दशक के सुरीले गीत सुनाए। सोलो डांस में फजल, खुशी, अश्लेषा, लारैब और अनुष्का ने एक से बढ़कर एक परफार्मेंस दीं। ग्रुप डांस में सुप्रिया, यशस्वी, अदिति, निकिता, दिव्या और विधि ने सबको प्रभावित किया आस्था, प्रियम्वदा, रहना और साक्षी ने अपनी कविताओं से सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया।

सीईटी के 29 विद्यार्थियों का इंफोसिस लिमिटेड में चयन

एसआरएमएस इंजीनियरिंग (बरेली-उन्नाव) के बीटेक, कम्प्यूटर साइंस एंड इंजीनियरिंग, इंफारमेशन टेक्नोलाजी, इलेक्ट्रानिक्स एंड कम्यूनिकेशन इंजीनियरिंग तथा इलेक्ट्रिकल एंड इलेक्ट्रानिक्स इंजीनियरिंग विभाग के अंतिम वर्ष के 29 छात्र-छात्राओं का पहली अप्रैल को इंफोसिस लिमिटेड में चयन हुआ। यह जानकारी ट्रेनिंग डेवलवमेंट एंड प्लेसमेंट सेल के निदेशक डा.अनुज कुमार ने दी। चयनित विद्यार्थियों से 21 विद्यार्थी बरेली स्थित सीईटी, सात विद्यार्थी बरेली के सीईटीआर और एक विद्यार्थी उन्नाव स्थित सीईटी का है। उन्होंने बताया कि बरेली और उन्नाव स्थित एसआरएमएस इंजीनियरिंग इंस्टीट्यूशन्स के विद्यार्थियों को अब तक 446 जाब आफर प्राप्त हो चुके हैं।

कोका कोला बाटलिंग प्लांट का भ्रमण

लखनऊ स्थित एसआरएमएस आईबीएस की ओर से मैनेजमेंट के विद्यार्थी इंडस्ट्रियल विजिट के दौरान कोका- कोला बाटलिंग प्लांट पहुंचे। 20 अप्रैल से 25 अप्रैल के बीच इस औद्योगिक भ्रमण के दौरान विद्यार्थियों ने फैक्ट्री में काम का व्यावहारिक अनुभव हासिल किया। पीजी और यूजी कोर्स के विद्यार्थियों ने बाटलिंग प्लांट का पूरा दौरा किया। संयंत्र प्रबंधक संजय कुमार और शोभित ने कोका-कोला की उत्पादन इकाई के बारे में सभी सूक्ष्म विवरणों जानकारी दी। इस दौरे के दौरान छात्रों ने पेय उत्पादन की संचालन प्रक्रिया को बारीकी से देखा है। इस दौरान संयंत्र के सम्मेलन कक्ष में संवाद सत्र भी आयोजित किया गया, जहां संयंत्र प्रबंधकों ने संयंत्र उत्पादन की दिन-प्रतिदिन की गतिविधियों में आने वाली चुनौतियों को साझा किया।

ला कालेज में राष्ट्रीय वेबिनार का आयोजन

बरेली स्थित एसआरएमएस कालेज आफ ला में 30 अप्रैल को नेशनल वेबिनार का आयोजन हुआ। इस वेबिनार में आईएमएस देहरादून, ला कालेज देहरादून, एमेटी विवि सहित 61 संस्थानों के विद्यार्थियों, शोधकर्ताओं और अध्यापकों ने भाग लिया। नेशनल ला यूनिवर्सिटी सोनीपत के डा.सुखविंदर सिंह ने रिसर्च पब्लिकेशन के क्लोन जर्नल और उसके दुष्प्रभावों की जानकारी दी। वेबिनार में ला कालेज के प्राचार्य मुकुट बिहारी लाल शर्मा, डा.अशोक कुमार, सुषमा सागर, अक्षय किशोर मौजूद रहे।

एडवांस्ड कम्प्यूटर नेटवकर्स पर वर्कशाप

एसआरएमएस सीईटीआर में 22 अप्रैल को बिल्डिंग एडवांस्ड कम्प्यूटर नेटवकर्स विषय पर एक दिवसीय वर्कशाप आयोजित हुई। ट्रस्ट सचिव आदित्य मूर्ति जी ने इसमें शामिल विभिन्न संस्थानों के 225 प्रतिभागियों का उत्साह वर्धन किया और नेटवर्किंग क्षेत्र में चुनौतियों एवं अवसरों के बारे में और ज्यादा सीखने के लिए प्रेरित किया। कार्यशाला के दौरान दो चरणों में व्याख्यान एवं प्रयोगशाला का आयोजन किया गया। प्रथम चरण कालेज के प्राचार्य प्रो. (डा.) संजीव पुरी ने प्रतिभागियों को नेटवर्किंग के क्षेत्र में इस्तेमाल होने वाले उपकरणों की जानकारी दी गई। दूसरे चरण में नेटवर्किंग टोपोलाजी एवं नेटवर्क स्थापित करने, सर्वर बनाने एवं उनके प्रबधंन सिखाए गए। कार्यक्रम में ट्रस्ट एडवाइजर इंजी. सुभाष मेहरा, रूचि शाह, इंजीनियर मानवी मिश्रा समेत सभी शिक्षक एवं इंसट्रक्टर उपस्थित रहे।

मैथमेटिक्स एवं कम्प्यूटर साइंस में कंटेम्पररी रिसर्च पर अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी

एसआरएमएस सीईटी में 29 अप्रैल को मैथमेटिक्स और कंप्यूटर साइंस में कंटेम्पररी रिसर्च विषय पर दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित हुई। इसका उद्घाटन एप्लाइड मेथमेटिक्स एप्लीकेशन के को फाउंडर एंड एडीटर इन चीफ और यूएसए की प्रैरी व्यू ए एंड एम यूनिवर्सिटी के प्रोफेसर अली अकबर मुंतजिर हगीगी, एसआरएमएस ट्रस्ट के चेयरमैन देवमूर्ति जी और सचिव आदित्य मूर्ति ने किया। सीईटी के डीन डा.प्रभाकर गुप्ता ने सभी का स्वागत किया और संगोष्ठी के संयोजक प्रो. एसएस मौर्य ने विषय की जानकारी दी। प्रयागराज स्थित मोतीलाल नेहरू नेशनल इंस्टीट्यूट आफ टेक्नोलाजी के प्रो.धर्मेंद्र सिंह ने एडवांस रिसर्च के भविष्य पर व्याख्यान दिया। दूसरे दिन कंप्यूटर साइंस और मैथमेटिक्स विभाग की ओर से दो-दो तकनीकी सत्र हुए। इसमें बीआईटी मेसरा की डा.श्रुति गर्ग, आईआईएफटी मुरादाबाद के डा.भारत भूषण अग्रवाल, एबीईएसआईटी गाजियाबाद के डा.रिजवान खान, एनआईटी हमीरपुर के डा.अरुण यादव, डा.सपना रतन शाह, जा.गजेंद्र सिंह, डा.राखी और डा. अब्दुल रहीम मौजूद रहे। कंप्यूटर साइंस के 17 और मैथमेटिक्स से संबंधित 18 शोध पत्र पढ़े गए।

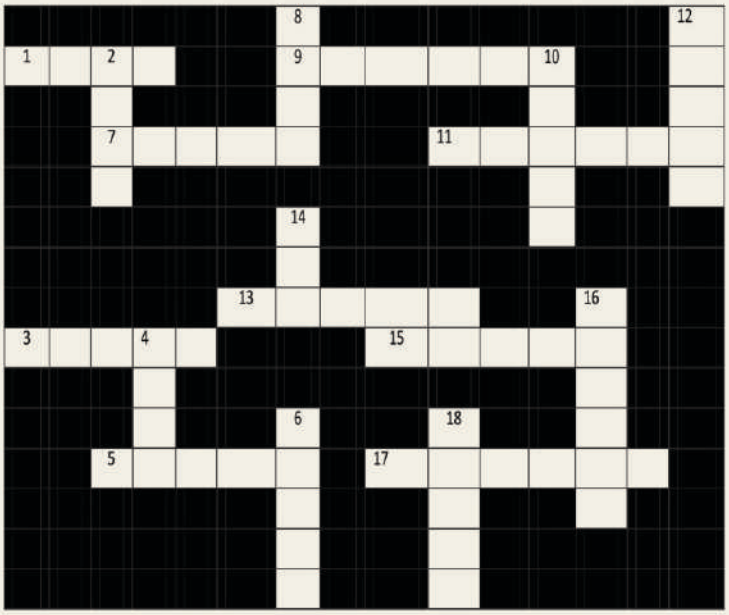

Crosswords No. 24

HORIZONTAL

1.The longest river of Africa
3. Portuguese river sharing its name with Purus province
5.Second longest river in Russia
7. The principle river of western Africa
9. The longest navigable river in the world
11. River in China hosting various species of large fish
13. It is also known as Zaire river
15. The river in Kazakhstan also known as Esil
17. It is named by Sir Thomas Button, river of North America

VERTICAL

2.River of Russia forming the largest artic delta
4. The other name for this river is Yaik
6. The river forms the backbone of agriculture and food in Pakistan
8.Is also known as Heilong Jiang major waterway in East Asia
10.River in Canada home to longest salmon in world
12.River famous for Sturgeon fishery
14. Natural border between united states and Mexico
16.The second longest river in the world
18. The river of Canada also known as Beaver

क्रॉस वर्ड एवं सुडोकू का
परिणाम अगले अंक में देखें

Sudoku No. 24

	1		8			7		
6			9				8	
				7	5			3
8		1				6		
		4					9	8
	6			9		4		
9			4		7		3	
		8						4
	4			8	9			

Answer: Crosswords No. 23

3	6	1	2	7	9	5	8	4
5	9	2	4	8	3	6	1	7
4	7	8	6	5	1	2	3	9
1	8	7	3	4	2	9	6	5
2	5	6	7	9	8	3	4	1
9	3	4	1	6	5	8	7	2
6	1	5	8	2	7	4	9	3
7	4	9	5	3	6	1	2	8
8	2	3	9	1	4	7	5	6

Answer: Soduko No. 23

SRMS

किडनी ट्रान्सप्लांट एवं कॉम्प्रीहेंसिव केयर एक छत के नीचे

अब बरेली में

प्रथम समस्त उच्चस्तरीय सुविधाओं से युक्त

किडनी ट्रान्सप्लांट सेंटर

स्टेट-ऑफ-द-आर्ट इन्फ्रास्ट्रक्चर

- गुणवत्तापूर्ण जीवन प्रदान करने के साथ समस्त एडवांस रीनल डिसीजेज के इलाज हेतु सर्वश्रेष्ठ सेंटरों में से एक
- अनुभवी एवं प्रशिक्षित ट्रांसप्लांट चिकित्सकों की सर्वश्रेष्ठ टीमों में से एक
- अनुभवी एवं प्रशिक्षित पैरामेडिकल एवं नर्सिंग टीम
- ऑपरेशन थियेटर, आईसीयू, रेडियोलॉजी, पैथोलॉजी, ब्लड ट्रांसफ्यूजन आदि सुविधायें एक छत के नीचे
- सभी इन्कम वर्गों के लिए किडनी ट्रांसप्लांट हेतु किफायती पैकेज उपलब्ध
- विभिन्न सरकारी योजनाओं से भी ट्रांसप्लांट की सुविधा

किडनी ट्रान्सप्लांट टीम

डॉ. संजय कुमार
एमडी, डीएनबी (नैफ्रोलॉजी)

डॉ. ब्रजेश अग्रवाल
एमएस, डीएनबी (यूरोलॉजी)

डॉ. महेश त्रिपाठी
एमएस, एमसीएच (यूरोलॉजी)

डॉ. विद्यानंद
एमडी, डीएनबी (नैफ्रोलॉजी)

डॉ. प्रदीप मेंदीरत्ता
एमएस, एमसीएच (यूरोलॉजी)

डॉ. रेहान फरीद
एमएस, एमसीएच (यूरोलॉजी)

डॉ. विश्वदीप सिंह, एमडी (ऐनेस्थीसिया), ट्रान्सप्लांट ऐनेस्थेटिस्ट

175000 से अधिक डायलिसिस एवं 20 हजार से अधिक गुर्दा सर्जरी का अनुभव
16 बेड का अत्याधुनिक डायलिसिस यूनिट

✆ 9458704444, 9458706531

श्री राम मूर्ति स्मारक इन्स्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज
13 किमी॰,बरेली-नैनीताल रोड, भोजीपुरा, बरेली | www.srms.ac.in